विश्व की शैल कला पर कार्यशाला संपन्न

भोपाल, देशबन्धु। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वधान में लगाई गई प्रदर्शनी 'विश्व की शैल कला' पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में भोपाल के शासकीय गीतांजलि कन्या महाविद्यालय,शा. नवीन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, शासकीय एम.एल.बी कन्या महाविद्यालय,जागरण लेक् सिटी विश्व विद्यालय एवं संग्रहालय स्कूल के 150 छात्र -छात्राओं ने शैलचित्रकला पर अपने पाठ्यक्रम के अंतर्गत कार्यशाला में प्रतिभागिता की।

इस दौरान उन्होंने मानव संग्रहालय लगे विभिन्न महाद्वीपों में पाए गए शैलचित्रों की प्रदर्शनी को देखकर चित्रांकन किया। विद्यार्थियों ने कहा कि इस प्रदर्शनी एवं कार्यशाला के माध्यम से हमने सीखा इन शैलचित्रों में दैनिक जीवन की घटनाओं से लिए गए विषय अंकित हैं। ये हजारों वर्ष पहले का जीवन दर्शाते हैं। इस प्रदर्शनी में दिखाए गए चित्र मुख्यत: नृत्य, संगीत, आखेट, घोड़ों और हाथियों की सवारी, आभूषणों को सजाने के बारे में हैं। इनके अलावा बाघ, सिंह जंगली सुअर, हाथियों, कुत्तों और घड़ियालों जैसे जानवरों को भी इन तस्वीरों में चित्रित किया गया है जो कि अविश्वसनीय है। प्रख्यात इतिहासकार एवं शैलचित्र विशेषज्ञ, प्रो रहमान अली एवं डॉ बी.एल. माझा ने विद्यार्थियों को शैलचित्र इतिहास के कालखंडों के रहस्यों के बारे में बताते हुए कहा कि ये शैलचित्र प्राचीन शैली के गवाह हैं, इतिहास के जानकार शैलचित्रों के आरंभ को ईसा पूर्व से ही जोड़ते हैं।

नईदुनिया

Sunday February 19, 2017

कार्यशाला राष्ट्रीय इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय में 150 विद्यार्थियों ने...

विभिन्न महाद्वीपों के शैलचित्रों की प्रदर्शनी का चित्रांकन किया

भोपाल (ब्यूरो)।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वधान में लगाई गई प्रदर्शनी 'विश्व की शैल कला' पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में भोपाल के शा. गीतांजलि कन्या महाविद्यालय, शा. नवीन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, शा. एम.एल.बी कन्या महाविद्यालय, जागरण लेक सिटी यूनिवर्सिटी एवं संग्रहालय स्कूल के १५० छात्र-छात्राओं ने शैलचित्रकला पर अपने कोर्स वर्क के अंतर्गत कार्यशाला में प्रतिभागिता की। उन्होंने इस दौरान मानव संग्रहालय लगे विभिन्न महाद्वीपों में पाए गए शैलचित्रों की प्रदर्शनी को देखकर चित्रांकन किया। विद्यार्थियों ने कहा कि ''इस प्रदर्शनी एवं कार्यशाला के माध्यम से हमने सीखा इन शैलचित्रों में दैनिक जीवन की घटनाओं से लिए गए विषय अंकित हैं। ये हजारों वर्ष पहले का जीवन दर्शाते हैं। इस प्रदर्शनी में दिखाए गए चित्र मुख्यतः नृत्य, संगीत, आखेट, घोड़ों और हाथियों की सवारी, आभूषणों को सजाने के बारे में हैं। इसके अलावा बाघ, सिंह जंगली सुअर, हाथियों, कुत्तों और घड़ियालों जैसे जानवरों को भी इन तस्वीरों में चित्रित किया गया है जो कि अविस्मरणीय है''। प्रख्यात इतिहासकार एवं शैलचित्र विशेषज्ञ, प्रो रहमान अली एवं डॉ बी.एल. मल्ला ने विद्यार्थियों को शैलचित्र इतिहास के कालखंडों के तथ्यों के बारे में बताते हुए कहा कि ''ये शैलचित्र प्राचीन शैली के गवाह हैं, इतिहास के जानकार शैलचित्रों के आरंभ को ईसा पूर्व से ही जोड़ते हैं। यह देखना आश्चर्यजनक है कि इन पेंटिंग्स में जो रंग भी गए थे वो कई सदी बाद अभी तक वैसे ही बने हुए हैं. इन पेंटिंग्स में आमतौर पर प्राकृतिक लाल, गेरुआ और सफेद रंगों का प्रयोग किया गया है। भीम बैठका के प्राचीन मानव के सांस्कृतिक विकास का कालक्रम विश्व के अन्य प्राचीन समानांतर स्थलों से हजारों वर्ष पूर्व हुआ था।

राज एक्सप्रेस | महानगर
रविवार 19 फरवरी 2017

लाल, गेरुआ और सफेद रंग से बनी शैल कला

मानव संग्रहालय में विद्यार्थियों ने किया शैल कला का भ्रमण

भोपाल। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में संग्रहालय में लगाई गई प्रदर्शनी 'विश्व की शैल कला' की शनिवार को शहर के कॉलेज के स्टूडेंट्स ने विजिट की। विजिट के दौरान भोपाल के शा. गीतांजलि कन्या महाविद्यालय, शा. नवीन कला एव वाणिज्य महाविद्यालय, शा एमएलबी कन्या महाविद्यालय, जागरण लेक सिटी यूनिवर्सिटी एवं संग्रहालय स्कूल के डेढ़ सौ विद्यार्थियों ने शैल चित्रकला पर अपने कोर्स वर्क के अंतर्गत कार्यशाला में शिरकत की।